इसके अलावा, हिंदू पूरी तरह से समझता है कि आध्यात्मिक अभ्यास को मजबूरी से नहीं करवाया जा सकता है क्योंकि व्यक्ति केवल बाहरी क्रियाओं को बल से बदल सकता है, मन की आंतरिक सोच को नहीं। और आध्यात्मिक अभ्यास पूरी तरह से मन पर निर्भर करता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

एक बार, भगवान राम ने अयोध्या के सभी निवासियों को अपने प्रवचन के लिए आमंत्रित किया। शुरुआत में उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूं कि आपको कुछ सलाह दें। लेकिन यह मत सोचो कि मेरी शक्ति या राजा के रूप में मेरी श्रेष्ठता स्थिति के कारण आप मेरी सलाह मान लें । कोई जबदस्ती नहीं है। मानना या न मानना यह पूरी तरह से आप पर निर्भर है। मैं जो उपदेश देता रहा हूं यदि आप इसे पसंद करते हैं, तो इसे स्वीकार करें अन्यथा इसे छोड़ दें और जो भी आपको सही लगे उसे करें। भगवान राम तब कहा, देखिये, मैं ही आपका सच्चा रिश्तेदार हूँ। मैं आपका सच्चा पिता, माता, भाई, पति, पुत्र और अन्य सभी संबंधी हूं। आप अपने आप को मुझे समर्पित करो।

इस प्रकार हिंदू धर्म में बल का कोई प्रयोग नहीं है। लोग निराकार ईश्वर की या ईश्वर के किसी भी रूप की पूजा करने के लिए स्वतंत्र हैं। इसीलिए भारत में आपको सभी प्रकार के उपासक मिल जाएंगे। लोग विभिन्न भगवान की पूजा करते हैं और जानते हैं कि एक ही भगवान के अलग-अलग रूप हैं। यही कारण है कि आज सभी उपासक एक साथ शांति से रह रहे हैं।

इसीलिए यदि कोई मुस्लिम कृष्ण की पूजा करता है या

कोई मुस्लिम हिंदू भक्ति गीत इत्यादि गाता है तो भय और बल का कोई उपयोग नहीं होना चाहिए।

दुर्भाग्य से, भारत में, हिंदू से संबंधित किसी भी धार्मिक अभ्यास करने वाले किसी भी मुस्लिम को मुस्लिम समुदाय से मार्च, फतवे और दमन के अन्य उपायों का जबरदस्त विरोध मिलता है। ये सभी लोग अल्लाह की ओर जानेवाले व्यक्ति को रोकने का या उस व्यक्ति को परेशान करने का अपराध कर रहे हैं जो भगवान की महिमा गाना चाहता है।

चूँकि ईश्वर और अल्लाह एक ही हैं, ये लोग वास्तव में किसी को अल्लाह के पास जाने से रोक रहे है और इसलिए ये सभी तथाकथित इस्लाम के स्वयंभू संरक्षक मरने के बाद तेज तलवार पर यात्रा करते समय जोजक (नर्क) में गिरते हुए पाएंगे। उस समय उन्हें एहसास होगा कि हिंदुओं ने भी अपने तरीके से अल्लाह की पूजा की।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

कृष्ण बेहद आकर्षक और मनभावन रूप में अल्लाह ही हैं।

जीते जी इसे समझले तो बेहतर है, अन्यथा जीवन समाप्त होने के बाद, दु: ख, पीड़ा और पश्चाताप का कोई अंत नहीं होगा।

जो भी सुधार किए जाने हैं वे तभी किए जा सकते हैं जब व्यक्ति के पास मानव रूप में जीवन बचा हो। ईश्वर को याद करने में जीवन बिताएं और किसी भी धर्म के खिलाफ लड़ने में जीवन व्यतीत न करें क्योंकि सभी धर्म एक ही ईश्वर या अल्लाह या भागवान की ओर इशारा